सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 169

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
नवम्बर – 2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

आज आपको श्री गुरु द्वारा पूरी दुनिया को कारणदीक्षा दी जा चुकी है और श्री गुरु ने क्या किया है?तो आपको 'गुरुमंत्र' दिया है। आपको दिए हुए इस गुरुमंत्र के यानी ॐ के आगे और पीछे क्या श्री गुरु कुछ जोड़ नहीं सकते थे? परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसका कारण यह है कि विस्मरण यानी भूल जाना यह श्री परमेश्वर ने आपको दिया हुआ वरदान है या आपके कर्म ने आपको दी हुई देन है इसलिए **श्री गुरु ने आपको एक ही अक्षर का गुरुमंत्र दिया है जो आपको नित्य याद रहेगा।**

बहुत बार आपको यह अनुभव हुआ है कि आपको एक ही अक्षर याद आता है, उसके आगे या पीछे का याद नहीं आता। जैसे आपको किसी व्यक्ति के नाम का एक ही अक्षर याद आता है उसके आगे या पीछे का कुछ याद नहीं आता। **इसीतरह अगर आपकोॐके आगे कुछ मंत्र लिखकर दिया तो तंत्र इस दृष्टि से आप यंत्र बन जाओगे** और इस जन्म के बाद जब आप फिर से जन्म लेकर आओगे तब क्या होगा?तो आप विचार करते रहोगे कि ॐ के आगे क्या मंत्र था?इसलिए आज आपको कारणदीक्षापरत्वे 'ॐ' यह गुरुमंत्र दिया है ताकि आपके आगे के जन्मों में आपको केवल ॐ याद आएगा और वाकई वह याद आता है।

'ॐयह एक ही अक्षर याद रहना' इतनी साक्षात्कारी बाजु आपकी साधनापरत्वे आपमें सिद्ध हो गई तो आपके बारे में यह होगा–

सप्तवर्षे बाललीला खेळे नरहरी।
ॐकाराविण मुखे शब्द न उच्चारी।।

अर्थात सात साल की उम्र तक श्री नरहरी यानी नरसिंह सरस्वती महाराज बाल लीला करते खेलते रहे लेकिन उन्होंने ॐके अलावा दूसरे शब्द का उच्चार अपने मुँह से नहीं किया।

प.पू. श्रीपाद श्री वल्लभ जी ने प.पू. नरसिंह सरस्वती स्वामी की माता को एक व्रत बताया था और उन्होंने **श्रद्धा** से वह व्रत किया उन्होंने **गुरुआज्ञा** का यथायोग्य पालन किया इसलिए प.पू. श्रीपाद श्री वल्लभ जी को ही नरसिंह सरस्वती करके फिर से जन्म लेकर आना पड़ा। प.पू. श्रीपाद श्री वल्लभ जी के कृपाशीर्वाद का एहसास कैसे हुआ है?तो ''सप्त वर्षे बाल लीला खेळे नरहरी। ॐकारा विण मुखे शब्द न उच्चारी।'' यह अवस्था उन्हें जन्मतः प्राप्त थी।

ऐसी ये अवस्थाऐं दुर्लभ यानी प्राप्त करने के लिए कठिन नहीं होती। अगर आप सातत्य से (निरंतर) एक ही तत्व से एक ही विचार से और एक ही आचार से तथा एक ही गुरु के प्रति एकनिष्ठ रह सके तो आपके लिए जीवन में असाध्य ऐसा कुछ भी नहीं है। इसमें महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपको यह साध्य प्राप्त करके देने वाले श्री गुरु कदाचित ही मिलते है। ज्यादातर गुरु आपको यही बताते है,''अपना उपासना का बोझा लेकर आगे चलते रहो।'' मतलब उनका बोझा आपके बोझे के साथ उठाकर आगे ले जाओ यह कहने वाले गुरु ही बहुत मिलते हैं।

अब तक आपने भिन्न–भिन्न मार्गदर्शन के अनुसार अलग–अलग साधनों का अवलंबन किया है लेकिन आपके काया, वाचा, मन एकरूप नहीं हुए है। यहाँ उपस्थित भक्तभाविकों में से किसी ने अगर ऐसे अलग–अलग मार्गों के साधन–सेवा से अपनी काया, वाचा, मन का एकरूपत्व साध्य किया है तो वे मुझे जरूर बताए। क्या कोई ऐसा व्यक्ति यहाँ उपस्थित है?कोई भी नहीं। इसका कारण यह है कि काया, वाचा, मन का एकरूपत्व प्राप्त करना बहुत कठिन और गूढ़ है। संशोधन किए बिना काया, वाचा, मन एकरूप होना यह अवस्था आपको प्राप्त नहीं हो सकती। काया की गति, वाचा की गति तथा मन की गति ये तीनों अलग–अलग गतियाँ जब तक एक ही गति स्तर पर नहीं आती है तब तक आपको अपना साधन प्राप्त नहीं होता।

यह गति यानी स्पीड (speed) का विषय है। सबसे अधिक गति किसे है?तो **प्रदार्थ** (matter) **में सबसे ज्यादा स्पीड लाइट यानी प्रकाश की है। इसलिए आपको बताया है कि आपकी ॐकार साधना का साध्य 'प्रकाश' में होता है।** प्रकाश की गति यानी स्पीड़ सबसे अधिक है।

काया, वाचा, मन की गति के बारे में यह मुलाकात है, आप ध्यान से सुनिए।

आपकी काया, वाचा, मन का माध्यम पंचमहाभूततत्वों से यानी पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश से बना है।

काया	**वाचा**	**मन**
पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश ये सर्व पंचमहाभूततत्व	वायु	आकाश

(1) काया –पृथ्वी आप, तेज, वायु, आकाश इन पंचमहाभूततत्वों से आपकी काया बनी है और इन्हीं पंचमहाभूततत्वों से यह धरती (पृथ्वी) भी बनी है। हम जिस धरती पर रहते है खड़े है, उसकी गति और आपकी काया की गति यह एक–दूसरे के पूरक होती है। अगर यह पूरक नहीं होगी तो हम गिर जाऐंगे।

(2) वाचा– वाचा के स्थान पर **वायुतत्व** होता है। पृथ्वी की गति और वायु की गति एक–दूसरे से अलग होती है।

(3) मन – मन के स्थान पर **आकाशतत्व** होता है। आकाश की गति मतलब प्रकाश की गति है इसलिए आपके जीवन में आपका मन कहीं भी वातावरण में जा सकता है।

अगर दूर ऊपर की मंजिल पर से किसी मनुष्य को मुझे बुलाना है तो मैं उसे वाचा द्वारा बुला नहीं पाऊँगा क्योंकि मेरी पुकार उसे सुनाई नहीं देगी परन्तु मन से मैं एक ही क्षण में ऊपर की मंजिल पर जा सकता हूँ। अगर काया से मुझे ऊपर की मंजिल पर जाना है तो मुझे मेरी काया को खींच कर ऊपर ले जाना पड़ेगा और उसके लिए समय लगेगा परन्तु मन से मैं एक ही क्षण में ऊपर की मंजिल पर जा सकता हूँ।

इस तरह काया, वाचा, मन इन तीनों की अलग–अलग गतियाँ है। **आपको कारणदीक्षा देते समय यानी ॐकार साधना देते समय इन तीनों को एकरूप करके उन्हें ॐकार की गति प्राप्त करके देनी होती है।** ॲन्ड दी स्पीड ऑफ ॐकार इज मोर दैन स्पीड़ ऑफ लाईट मतलब **ॐकार की गति प्रकाश की गति से भी अधिक तेज है** इसलिए आप ॐकार करते समय हिलते है, आपको झटके लगते है। इट इज बियाँड दी इमॅजिनेशन एण्ड क्रिएशन ऑफ दी वर्ल्ड यानी यह सब कल्पना के और जगत की निर्मिति के परे है। आप ॐकार करते समय दूसरे जगत में जाते हैं।

इस जगत में पृथ्वी, खगोल, ग्रह आदि गतिपरत्वे कार्य करते है। ज्योतिषि तर्क लगाकर तथा अनुमान से इन ग्रहों की दिशा बताते है। **मेरे जीवन में (वं. दादा महाराज के) मुझे कभी भी ग्रहों से संबंधित बाधा नहीं हुई** क्योंकि ॐकार साधना के कारण मेरी इतनी गति है कि शनि की बाधा होने से पहले ही मैं घूम जाता हूँ। लोगों को साढ़ेसाती में भीख मांगने की नौबत आती है और मैंने साढ़ेसाती में पूना जैसे शहर में 3 लाख का घर बनाया। ज्योतिषि मुझे पूछते है, ''यह कैसे हुआ?'' मैंने उन्हें कहा, ''आप ही इसके कारण की खोज कीजिए। शनि जब मेरे चारों ओर साड़ेसात साल भ्रमण करता है तब तक मेरी ॐकार की गति के कारण मैं शनि के चारों ओर 108 बार परिक्रमा करता हूँ! मतलब शनि निर्बल हुआ **'गुरुकृपा' का सामर्थ्य कितना महान है इसका विचारा करो।**

आप कभी–कभी कोई संकल्प करते हैं। मैंने आपको संख्यावाचक जाप करने के लिए मना किया है फिर भी आप संकल्प करके एक लाख जाप शुरु करते है लेकिन उस जाप में जब तक आपकी वाचा की गति और काया की गति साध्य नहीं होती तब तक आपके जाप की सिद्धता नहीं हो सकती। काया, वाचा, मन इन तीनों की गति जब एकरूप होती है उस समय आपने केवल 11 बार जाप करने से भी आपका साध्य–आपको प्राप्त होता है वरना 11 लाख जाप करके भी आपका साध्य आपको प्राप्त नहीं होता।

काया, वाचा, मन इन तीनों की अलग–अलग गति है और वह आपके आधीन नहीं है। इसलिए प. पू. पंत महाराजजी के पद में है, **'गुरुविणे गति नाही मज'** अर्थात गुरु के बिना मुझे गति प्राप्त होना संभव नहीं है। यहाँ 'गति' इस शब्द का उपयोग काया, वाचा, मन इन तीनों की एकरूपता के लिए किया है।

हम **'सद्गति'** शब्द का उपयोग करते है उसका अर्थ इस प्रकार है – हमारे काया, वाचा, मन इन तीनों की गति अलग–अलग है। इसलिए हम एकरूप नहीं हो सकते परन्तु जिस समय हमें **'गुरुकृपा'** प्राप्त होती है तब हमें **'सद्गति'** प्राप्त होती है मतलब तब काया, वाचा, मन इन तीनों की गति हमारे आधीन होती है। मृत्यु के बाद बैकुंठ (स्वर्गलोक) में जाने के लिए वहाँ से हवाई जहाज आना या अपने जीवन से छुटकारा पाना इस तरह की क्रिया होना मतलब सद्गति प्राप्त हुई ऐसा नहीं है। काया, वाचा, मन की भिन्न–भिन्न गति के अनुसार आपका जीवन व्यतीत होता रहता है लेकिन आपको **'गुरुकृपा'** प्राप्त होने के बाद आपके काया, वाचा, मन इन तीनों को एक ही गति प्राप्त होती है। इसलिए 'गुरुविणे गति नाही' अर्थात गुरु के बिना मुझे गति प्राप्त होना संभव नहीं है। **'सद्गति'** मतलब यह गति

अस्तित्व में ही नहीं रहना और मार्गदर्शन के अनुसार जो साधन बताया है वह सद्‌गत होना और उस सद्‌गति में आपने एकरूप होना, इसका अर्थ सद्‌गति है। इस भवसागर के बंधन के परे जाना और जगत के लोगों की ओर पीठ फेरना यह 'सद्‌गति' नहीं है।

मतलब **ॐकार गतिमान है और उस गति द्वारा आप 'प्रकाशमान' अवस्था की ओर जाते है।**

'पिंडी ते ब्रह्मांडी' यानी जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है यह कहते है, उसका अर्थ क्या है? बहुत से कीर्तनों में और प्रवचनों में यह बताया जाता है लेकिन ब्रह्मांड तक हमारे हाथ पहुँच नहीं सकते इस लिए पिंड में क्या–क्या है वही देखेंगे।

जो कुछ हमें इस जगत में दिखाई देता है और जो कुछ यहाँ अदृश्य रूप में है वह सब हमारे काया, वाचा, मन में अणु परमाणु के रूप में है। अगर ऐसा नहीं होता तो क्या होता? ज्योतिष शास्त्र का कार्य नहीं हो पाता। **ज्योतिष शास्त्र को मानवी जीवन से इसी आधार पर जोड़ा गया है।** आकाश में नवग्रहों की मालिका है। जिस तरह आप ॐ कार से लहरें निर्माण करते है और उन्हें धारण करते है उसी तरह की क्रिया इन नौ ग्रहों में और आपमें होती रहती है। **अगर उन ग्रहों के अणु–परमाणु आपमें नहीं होते तो उन ग्रहों से प्रकाशमान हुई लहरें आप तक आकर आप पर प्रभाव नहीं डाल पाती।** मतलब शनि केवल आपके बाहर ही नहीं है, बाहर से शनि का प्रकाश आप तक आता है और अणु, परमाणु के इस रूप में शनि का अंश आपके अंदर है और इसी तरह सर्व नवग्रह और विश्व के सारे तारे, सितारे इन्होंने आपका शरीर व्याप्त किया है और इसे ही 'पिंडी ते ब्रह्मांडी' कहा गया है यानी जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है।

इस तरह से हमारी देहिक रचना विश्व की गति से जोड़ दी गई है इसलिए हमारे जीवन में कुछ घटनाऐं निसर्गतः घटित होती है तो कुछ अनैसर्गिक रीति से घटित होती है। **हमारे जीवन से ग्रहों का संबंध गतिमान स्थिति में है इसका पूर्णतः ज्ञान हमें होना अत्यंत आवश्यक है।**

मैंने आपको बताया है कि काया को गति है, वाचा को गति है, मन को गति है। हमारे एक गुरुबंधु ने इसका अध्ययन किया है। वे आपको इसका अधिक स्पष्टीकरण बता सकते है। वह आप ध्यान से पढ़िए, अगले अंक में। Continue.....

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible